International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct., 2025, pp: 12-15 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन''

प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह औलख
शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़, राजस्थान।

सविता छरंग
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ, राजस्थान।

Date of Submission: 26-08-2025 Date of Acceptance: 05-09-2025

➢ **सारांश :–**

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का स्वरूप बाल केंद्रित है जिसमें समस्त शिक्षा प्रणाली बालक के इर्द–गिर्द घूमती है जिसका उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास अर्थात बालक का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा प्रणाली में अपूर्व योगदान दिया है। शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा क्षेत्र में शिक्षण के तरीको, कौशलों, शिक्षण विधियों और सीखनें के विभिन्न अनुप्रयोगों के द्वारा शिक्षा को बाल केंद्रित बनाने में सहायता प्रदान की। मनोविज्ञान बालक के शारीरिक और मानसिक विकास का गहन अध्ययन कर बालक के संतुलित विकास को सुनिश्चित करती है। बालक के मानसिक विकास में बुद्धि लब्धि का अध्ययन मनोविज्ञान का प्रमुख विषय रहा है किंतु वर्तमान समय में संज्ञानात्मक बुद्धि जिसे बुद्धि लब्धि (IQ) के रूप में इंगित किया जाता है के साथ–साथ संवेगात्मक बुद्धि (EQ) की अवधारणा पर अधिक बल दिया जा रहा है। क्योंकि संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए डेनियल गोलमैन ने कहा कि ''व्यक्ति अपने जीवन में जो भी सफलता प्राप्त करता है उसमें 80% संवेगात्मक बुद्धि और केवल 20% बुद्धि लब्धि का योगदान होता है।'' इसलिए हम समझ सकते है कि मानवीय जीवन में संवेगात्मक बुद्धि का क्या महत्व है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें संवेगात्मक बुद्धि के मापन की विभिन्न विधियों का प्रयोग कर पृथक्–पृथक् विद्यालयों में अध्ययनरत् विभिन्न संकायों के विद्यार्थियों की सांवेगिक क्षमता, स्थिरता, तनाव, दुश्चिंता और संवेगात्मक नियंत्रण क्षमता का अध्ययन किया गया। शोधार्थी ने पाया कि जिन विद्यार्थीयों की संवेगात्मक बुद्धि अच्छी और उच्च थी तथा जो विद्यार्थी अपने संवेगो को नियंत्रित करने में सक्षम थे, वे अपने शिक्षण–अधिगम और पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रति अन्य बालकों की तुलना में अधिक सक्रिय थे तथा मानसिक रूप से स्वस्थ और सुदृढ पाये गये।

➢ **शोध का उद्देश्य :–**

1. प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना है।

➢ **तकनीकी शब्दावली :–** विद्यार्थी, अधिगम, क्षमता, संवेग, बुद्धि, प्रभाव एवं अध्ययन।

➢ **प्रस्तावना :–**

शिक्षा एक महत्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है, यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। अतीत काल से मनुष्य ने जागरूक रहकर अपनी वाक्–शक्ति का व्यक्ति और व्यक्ति के बीच, समुदाय तथा समुदाय के बीच तथा संतति और संतति के बीच अपने व्यावहारिक अनुभव ज्ञान भंडार का संचार करने के लिए उपयोग किया है। इनमें प्राकृतिक घटनाओं, नियमों, विधि निषेध की सांकेतिक भाषा का उपयोग है ताकि व्यक्ति का सामाजीकरण हो सके और वैयक्तिक स्मृति के माध्यम से पूरी मानव जाति जीवित रह सके। प्रारंभ में शिक्षा एक जैविक आवश्यकता के रूप में विकसित हुई, जैविकी और शरीर क्रिया विज्ञान ने मनुष्य को नग्न ही रचा और वह अपने वातावरण में जीवित रहने के लिए सक्षम नही था, किंतु अपनी मूल प्रवृत्तियों की जन्मजात कमजोरियों के उपरान्त भी स्वयं को जीवित रखने तथा अपना विकास करने में शनैः–शनैः वह सफल हो सका। वातावरण से निरंतर संघर्ष करते हुए उसने जीना सीखा और क्रमशः सामूहिक प्रयासों से अपना एक समाज गठित किया। परिवार की इकाई तथा आदिम कबीले आरंभ कर जीवन संबंधी भौतिक कार्यो पर ध्यान

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct., 2025, pp: 12-15 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

केंद्रित कर उसने अपने ज्ञान और अनुभव की पूँजी की उत्तरोतर वृद्धि की, अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को पहचानना और उन्हें अभिव्यक्त करना सीखा और इस तरह अपनी मानसिक शक्तियों का विकास किया।

मनुष्य की मानसिक शक्तियों के विकास में शिक्षा का प्रमुख योगदान रहा है। मनुष्य के सोचने, समझने, विचारने, तर्क, चिंतन और समस्या–समधान की योग्यता की संबंध व्यक्ति की मानसिक योग्यता से होता है जो संज्ञानात्मक बुद्धि के रूप में जाना जात है। संज्ञानात्मक बुद्धि जिसे बुद्धि लब्धि के रूप में जाना जाता है, वही व्यक्ति के अपने संवेगो, भावनाओं को समझने, प्रकट करने और उन्हें नियंत्रित करने की योग्यता को संवेगात्मक बुद्धि के रूप में जाना जाता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की सफलता और असफलता के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विद्यालय जीवन में संवेगात्मक बुद्धि न केवल बालकों की अधिगम क्षमता को प्रभावित करती है बल्कि यह बालकों की निर्णय क्षमता और पारस्परिक संबंधों के निर्धारण की भी परिचायक होती है।

➢ संवेगात्मक बुद्धि :–

संवेगात्मक बुद्धि का संप्रत्यय बुद्धि के संप्रत्यय को उसके बौद्धिक क्षेत्र से अधिक विस्तार देता है और संवेगो को भी बुद्धि के अंतर्गत शामिल करता है। संवेगात्मक बुद्धि का संप्रत्यय सामान्य बुद्धि की भारतीय परंपरा की अवधारणा से निर्मित हुआ है। संवेगात्मक बुद्धि स्वयं की एवं दूसरों के संवेगो और भावनाओं को जानने, समझने, अभिव्यक्त करने और नियंत्रित करने की क्षमता का नाम है। संवेगात्मक बुद्धि को सामाजिक बुद्धि के रूप में भी जाना जाता है जिसका संबंध सामाजिक कुशलता, सामाजिक संबंध और व्यवहार से लगाया जाता है। मुख्य रूप से संवेगात्मक बुद्धि से तात्पर्य व्यक्ति के सांवेगिक पक्ष से संबंधित क्षमताओं और शीलगुणों के समुच्चय से से है। अपनी स्वयं की भावनाओं और संवेगों को समझकर उनका उचित ढंग से प्रबंधन करना ही संवेगात्मक बुद्धि है। जिन व्यक्तियों में संवेगात्मक बुद्धिमता अधिक होती है, वे बदलते वातावरण के साथ शिघ्र समायोजित हो जाते है इसलिए उनकी सफलता की संभावनाएँ अधिक बढ जाती है। सामान्यतः लोग यह समझते है कि अपनी बुद्धि लब्धि (IQ) के कारण ही कोई व्यक्ति अपने जीवन में सफलताएँ प्राप्त करता है, किंतु मनोविज्ञान के आधुनिक प्रयोगो और शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि एक व्यक्ति अपने जीवन में जो भी सफलताएँ अर्जित करता है, उसका केवल 20% ही बुद्धि लब्धि (IQ) के कारण होता है और 80% संवेगात्मक बुद्धि (EQ) के कारण होता है। बुद्धि से संज्ञानात्मक योग्यता का बोध होता है और लम्बें समय तक यह माना जाता रहा कि संज्ञान तथा संवेग परस्पर विरोधी मनः स्थितियाँ है, किंतु जीवन में सफल समायोजन करने में संज्ञान तथा संवेग दोनों ही महत्वपूर्ण होते है। व्यक्ति के जीवन में भावनाओं की उपयोगिता और महत्व को जानने के प्रयासों में सर्वप्रथम संवेगात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग अमेरिकी मनोवैज्ञानिक पीटर सालवे और जॉन मेयर ने किया और इसे विश्व भर में चर्चित करने का श्रेय अमेरिकी मनोवैज्ञानिक डेनियल गोलमैन को दिया जाता है जिन्होनें अपनी चर्चित पुस्तक "Emotional intelligence : Why it can better more then IQ" में संवेगात्मक बुद्धि की वैज्ञानिक और सैद्धांतिक व्याख्या की। डेनियल गोलमैन के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि के कारण व्यक्ति अपनी स्वयं की और दूसरों के संवेगों और भावनाओं को पहचानता और समझता है।

➢ परिभाषाएँ :–

- **डेनियल गोलमैन के अनुसार :–** ''संवेगात्मक बुद्धि स्वयं तथा दूसरों के संवेगों को पहचानने और उनको अच्छी तरह से प्रबंधित करने की क्षमता है।''
- **मेयर और सालवे के अनुसार :–** ''संवेगात्मक बुद्धि भावनाओं को समझने और व्यक्त करने, विचारों में भावना को आत्मसात करने, भावना को समझने और तर्क करने तथा स्वयं और दूसरों की भावनाओं को विनियमित करने की क्षमता है।''
- **बार ऑन के अनुसार :–** ''संवेगात्मक बुद्धि, गैर संज्ञानात्मक क्षमताओं, दक्षताओं और कौशलों का एक ऐसा व्यूह है जो हमारी पर्यावरणीय माँगो और दबाबो से निपटने की क्षमता को प्रभावित करती है।''

➢ अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाएँ 14 से 18 वर्ष के आयु वर्ग के होते है जो किशोरावस्था का आयू वर्ग होता है। इस आयु वर्ग अर्थात किशोरावस्था में तीव्र शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते है। इसी कारण **स्टेनले हॉल** ने कहा है कि ''किशोरावस्था, बडे संघर्ष, तनाव, तूफान और विरोध की अवस्था है।'' इस अवस्था में बालक अपने वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में भी कठिनाई का अनुभव करते है। जैसा कि **कोल एवं ब्रुस** ने कहा है कि ''किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिह्न संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन है।'' इस अवस्था में

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 5, Sep.-Oct., 2025, pp: 12-15 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

बालक अपने वातावरण, सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा परिवार के साथ समायोजन में कठिनाई का अनुभव करता है और असामान्य व्यवहार प्रदर्शित करता है। यह व्यवहार बालक की संवेगात्मक अस्थिरता को प्रकट करता है जिसका संबंध संवेगात्मक बुद्धि से होता है। संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा बालक अपनी स्वयं की और दूसरों की भावनाओं और संवेगों को जानने, समझने और उन्हें नियंत्रित करता है। निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले बालक अपने संवेगो पर नियंत्रण न कर पाने और कुसमायोजन के कारण शैक्षिक गतिविधियों से दूर होता जाता है परिणामस्वरूप वह शिक्षा में पिछड़ता जाता है और उसकी शैक्षिक उपलब्धियां निरंतर कम होती जाती है। इसलिए शोधकर्त्री द्वारा यह आवश्यक समझा गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया जायें। इसलिए इस शोध समस्या का अध्ययन औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

➢ शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

1. मेयर–सालवे–कारूसो संवेगात्मक बुद्धिमता परीक्षण : MSCEIT मेयर एट. एल. 2002।
2. बार–ऑन इमोशनल कोंशेंट इन्वेंटरी : EQ-I बार–ऑन 1997।
3. स्व–रिर्पोट संवेगात्मक बुद्धिमता परीक्षण : SREIT शूटे एट. एल. 1998।

➢ व्याख्या एवं विश्लेषण :–

शोधकर्त्री ने हनुमानगढ जिले में स्थित सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सर्वप्रथम इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का मापन करने के लिए उनकी आयु के स्तरानुसार मेयर–सालवे–कारूसो संवेगात्मक बुद्धिमता परीक्षण (MSCEIT), बार–ऑन इमोशनल कोंशेंट इन्वेंटरी (EQ-I), स्व–रिर्पोट संवेगात्मक बुद्धिमता परीक्षण (SREIT) का प्रयोग कर विद्यार्थियों को तीन समूहों निम्न EQ, सामान्य EQ और उच्च EQ वाले बालक में विभक्त किया गया। समूहों में वर्गीकृत इन बालकों को शोधकर्त्री ने अपने स्तर पर उनके कक्षा शिक्षण से संबंधित पाठ्क्रम का अध्ययन कराया, गृह कार्य प्रदान किया तथा रचनात्मक कार्य जैसे पेंटिंग्स, चित्र देखकर कहानी लेखन, जीवन शैली पर संक्षिप्त लेखन और भविष्य के प्रति दृष्टिकोण पर लेख इसके साथ–साथ इन विद्यार्थियों से सामाजिक सेवा कार्य जैसे सार्वजनिक स्थलों की सफाई, वृक्षारोपण और नूकड़ नाटक जैसे कार्य कराये गये। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में पाया कि जो विद्यार्थी उच्च EQ वाले समूह में शामिल थे उन्होनें अपने पाठ्क्रम संबंधी शिक्षण कार्य को रूचिपूर्ण ढंग से संपादित करने के साथ–साथ रचनात्मक कार्यो में भी बढ चढकर भाग लिया और इसमें बेहतर प्रदर्शन किया किंतु सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह रहा कि इस समूह के विद्यार्थियों ने सामाजिक सेवा कार्यो में अन्य दोनों समूह के बालकों की अपेक्षा न केवल बेहतर प्रदर्शन किया बल्कि इन कार्यो में वे बिना किसी प्रोत्साहन के स्वेच्छा से आगे बढकर और इनका अभिव्यक्ति स्तर और समूह में मिलकर काम करने का प्रयास सराहनीय रहा। सामान्य EQ वाले समूह के बालकों ने अपने शिक्षण संबंधी कार्यो और रचनात्मक कार्यो में तो बेहतर प्रदर्शन किया किंतु सामाजिक सेवा से संबंधित कार्यो के प्रति इन्होनें कोई विशेष रूचि नही दिखाई साथ ही उच्च EQ वाले बालकों की अपेक्षा इनकी अभिव्यक्ति करने की क्षमता भी कम रही। निम्न EQ वाले समूह के बालक जो अपने सामान्य शिक्षण कार्य भी अतिरिक्त सहयोग के बिना कर पाने में सक्षम नही थे, ये बालक शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण किसी भी कार्य को करने से कतराते रहे और इनका अभिव्यक्ति स्तर निम्न श्रेणी का था किंतु इस समूह के वे बालक जो IQ के स्तर पर तो कमजोर थे किंतु EQ के स्तर पर सामान्य या अच्छे स्तर के थे उनको जब प्रोत्साहित कर रचनात्मक और सामाजिक सेवा कार्य करने के लिए कहां गया तो उन्होनें न केवल कार्य किया बल्कि बेहतर प्रदर्शन भी किया। इन बालकों में शिक्षण कार्य में पिछड़ने के कारण आत्मविश्वास की कमी देखी गई जिसे प्रोत्साहन देकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जो सकारात्मक रहा।

➢ निष्कर्ष :–

शोधकर्त्री ने हनुमानगढ जिले में स्थित सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया जिसके निष्कर्ष स्वरूप यह तथ्य उजागर होता है कि विद्यालय के वे विद्यार्थी जिनका EQ स्तर सामान्य या उच्च था, उन्होनें अपने सामान्य शिक्षण कार्य के साथ–साथ पाठ्यसहगामी गतिविधियों, रचनात्मक और सामाजिक सेवा से जुड़े कार्यो में उन बालकों की अपेक्षा अधिक सहभागिता और बेहतर प्रदर्शन किया जिनका IQ तो अच्छा था किंतु EQ कम

था। साथ ही अच्छी EQ वाले विद्यार्थियों ने आपसी सहयोग और समूह की भावना के साथ कार्य किया जो उनमें नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास, समाजसेवा और कर्तव्य भावना के गुणों को व्यक्त करती है। जबकि केवल IQ में अच्छे और EQ में कमजोर विद्यार्थी अपने सामान्य शिक्षण कार्य में तो बेहतर प्रदर्शन कर रहे थे किंतु रचनात्मक और समाज सेवा के कार्यो में वे सामान्य स्तर के पाये गये उनका अभिव्यक्ति स्तर और आत्मविश्वास भी कम था

उपर्युक्त शोध निष्कर्ष के आधार पर शोधकर्त्री का मानना है कि संवेगातमक बुद्धि विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता को प्रभावित करती है। यदि दूसरे पक्ष की दृष्टि से देखा जायें तो शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है इसलिए केवल शैक्षिक ज्ञान अर्था आंकिक और शाब्दिक ज्ञान देने मात्र से बालक का सर्वांगीण विकास नही हो सकता उसके लिए आवश्यक है कि बालक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक पक्षों का पर्याप्त विकास हो उसके लिए बालकों को रचनात्मक और सामाजिक कार्यो की शिक्षा देना महत्वपूर्ण है और उसके लिए बेहतर EQ का होना आवश्यक है। इसलिए विद्यालय में शिक्षकों को बालकों के संवेगात्मक विकास की ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए तथा बालकों को आत्म जागरूकता, आत्म प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता और संवेगात्मक नियंत्रण का अभ्यास कराया जाना चाहिए ताकि बालकों की EQ का विकास हो सके, साथ पाठ्क्रम में बालकों के शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास की अध्ययन सामग्री का समावेश किया जाना चाहिए ताकि शिक्षा बालक के सर्वांगीण विकास करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर, सुरेश, सक्सेना, अनामिका ''आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं'' प्रकाशक – विनय रखेजा आर.लाल
बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, मेरठ।
2. जौहरी, बी. पी., पाठक, पी. डी. ''भारतीय शिक्षा का इतिहास'' प्रकाशक – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. डॉ. चतुर्वेदी, अनिल, ''संवेगात्मक बुद्धि'' प्रकाशक – पी. सी. पी. पब्लिकेशंस, जयपुर।
4. गोलमैन, डेनियल, ''इमोशलन इंटेलिजेंस'' न्यूयार्क बैंटम बुक
5. भटनागर, सुरेश, ''अधिगम एवं विकास के मनो–सामाजिक आधार'' प्रकाशक – इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, उत्तरप्रदेश।
6. पाठक, पी. डी., ''शिक्षा मनोविज्ञान'' प्रकाशक – विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. डॉ. सिंह, के.पी., डॉ. गुप्ता, महिमा, भटनागर, सुरेश ''शिक्षा मनोविज्ञान'' प्रकाशक – विनय रखेजा,
आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. डॉ. तिवारी, गोविंद, डॉ. सिंह, लाभ ''असामान्य मनोविज्ञान : मौलिक प्रक्रियाएँ'' प्रकाशक – वी.एम.ओ.यू., कोटा।
9. डॉ. जैन, कल्पना, डॉ. लवानिया, शिप्रा, ''संज्ञानात्मक मनोविज्ञान'' प्रकाशक – एस. आर. आर. पब्लिकेशन्स, आगरा।
10. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' प्रकाशक – विनय रखेजा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
www.sodhgangotri.inflibnet.ac.in
www.education.inindia.net
www.egyankosh.ac.in
www.academia.edu
www.helth.vikashpedia.in